आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2381 • उदयपुर, गुरुवार 01 जुलाई, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्

सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

कोरोना संक्रमितों के सेवार्थ नि:शुल्क सेवाएं

ऑक्सीजन सिलेंडर सेवा– अब तक नि:शुल्क 482 ऑक्सीजन सिलेण्डर दिये

'घर - घर भोजन' सेवा - अब तक घर-घर नि:शुल्क 21,3051 भोजन पैकेट वितरित

कोविड पॉजिटिव बीमारों को कोरोना किट सेवा

अब तक नि:शुल्क 1891 कोरोना किट संक्रमितों को दिये

बीमार को एम्बुलेंस सेवा

बीमार को हॉस्पीटल पहुँचाते संस्थान कर्मी अब तक 482 जन लाभान्वित

सेवा–जगत्

दिव्यांगों को समर्पित- आपका अपना नारायण सेवा संस्थान

संस्थान द्वारा 101 राशन किट व छाते वितरित

श्रद्धा और आस्था के विशेष पर्व निर्जला एकादशी पर गत सोमवार को नारायण सेवा संस्थान ने गरीब, असहाय, विधवाओं और जरूरतमंदों को शर्बत पिलाकर, छाते और राशन सामग्री बांटी।

संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि संस्थान ने कोरोना के चलते 50,000 मजदूर परिवारों को मदद पहुंचाने का लक्ष्य रखा है। जिसके चलते निर्जला एकादशी पर 110 छाते और 101 रोजगार विहीन कामगारों को राशन दिया गया। इस मौके पर निदेशक वंदना जी अग्रवाल और पलक जी अग्रवाल ने निर्जला एकादशी के महात्म्य पर प्रकाश डालते हुए गरीब बच्चों को नए वस्त्र, बिस्किट, फल व स्कूली बच्चों को स्टेशनरी व महिलाओं को साड़ियों का वितरण किया। शिविर के संयोजक दल्लाराम जी पटेल थे।

मूक– बधिर एवं दिव्यांगों ने किया योग

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पर सोमवार को नारायण सेवा संस्थान में मूक–बधिर एवं दिव्यांग युवाओं, बच्चों ने योगासन एवं प्राणायाम किये। कार्यक्रम का आगाज संस्थापक पद्मश्री कैलाश जी मानव के 'योग से रोग भगाओ' संदेश से हुआ।

संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि योग एवं प्रा.तिक चिकित्सक डॉ.दीपा जी के निर्देशन में योगाभ्यास सेवा तीर्थ बड़ी परिसर में हुआ। जिसमें विभिन्न राज्यों से आए दिव्यांगों और संस्थान के आवासीय विद्यालय के मूक–बधिर बच्चों ने कोरोना गाइडलाइन का पालन करते हुए योग के विभिन्न आसन किये।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में निहित है दिव्यांगजनों की प्रगति की कुंजी

— प्रशान्त अग्रवाल

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस डेटा साइंस का एक ऐसा क्षेत्र है, जिसने हाल के वर्षों में सभी कारोबारों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एआई या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक डेटा साइंस फंक्शन है जो कंप्यूटर को अनुभवों के माध्यम से सीखने और अपने स्वयं के स्तर पर ऐसे कार्य करने के लिए प्रशिक्षित करता है, जिन्हें कुछ इनपुट्स के साथ बेहतर तरीके से किया जा सकता है। ग्राहकों से संपर्क में सहायता के लिए उपयोग किए जाने वाले चौटबॉट्स से लेकर अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तक एक लंबा सफर तय किया गया है और कहा जा सकता है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक ऐसे शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरा है, जिसने पूरी दुनिया में कारोबार करने के तौर–तरीकों को बदल दिया है और इसीलिए आज पारस्परिक संपर्क के लिए दुनियाभर के व्यवसायों और सेवाओं में इसका इस्तेमाल किया जाता है। दरअसल एआई एक उपकरण है जो एआई पेशेवरों द्वारा फीड किए गए डेटा के माध्यम से विशिष्ट कार्यों को करने के लिए डेटा पैटर्न को पहचानता है। हाल के दिनों में जहां नई टैक्नोलॉजी बहुत कम समय में उन्नत हो रही हैं, वहीं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की अवधारणा का उपयोग विभिन्न कॉरपोरेट्स द्वारा ऐसी सहायक तकनीकों के निर्माण के लिए किया गया है, जो कि दिव्यांग जनों के लिए उपयोगी साबित हो सकती हैं।

एआई को अपनाने से अर्थव्यवस्थाओं में सीधे तौर पर व्यापक परिवर्तन नजर आ रहा है, साथ ही क्षमताओं का निर्माण करने के लिए भी एआई का उपयोग किया गया है। गार्टनर द्वारा हाल ही में जारी किए गए अध्ययन के अनुसार यह भविष्यवाणी की गई है कि वर्तमान में प्रबंधकों द्वारा किया जा रहा 69 प्रतिशत कार्य 2024 तक पूरी तरह से स्वचालित हो जाएगा। भारत सरकार को भी समावेशी विकास के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) में भरपूर संभावनाएं नजर आ रही हैं। यही कारण है कि सरकार ने एआई पर एक टास्क फोर्स की स्थापना की है और नीति आयोग को निर्देश दिए हैं कि वह एआई को लेकर एक राष्ट्रीय रणनीति तैयार करे। देश अपनी 4.0 औद्योगिक क्रांति में अपने एआई समाधानों के माध्यम से प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्रदान करना चाहता है जो अतिरिक्त लागत लाभ के साथ उत्पादकता बढ़ा सकते हैं। इस तरह व्यवसायों को श्रम की तुलना में थोड़ा अधिक लागत उत्पादक और लाभदायक बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इस प्रकार हमारा देश क्षमताओं का निर्माण करके डिजिटल दुनिया में व्याप्त वैश्विक विभाजन को कम करने की पूरी कोशिश कर रहा है।

नीति आयोग द्वारा प्रकाशित एक हालिया लेख के अनुसार भारत का शिक्षा जगत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीक को अपनाने के लिए पूरी तरह तैयार है। लेख में कहा गया है कि वर्ष 2030 तक दुनिया में सबसे अधिक युवा लोग हमारे देश में होंगे। इस दौर में एआई का उपयोग दिव्यांग लोगों के लिए भी फायदेमंद साबित हुआ है, क्योंकि अधिक से अधिक संगठन एआई को अपना रहे हैं और वे दिव्यांग लोगों को भर्ती करने के लिए तत्पर हैं, जो उन्हें परिवर्तनों के लिए अधिक अनुकूल बनाते हैं। एक तरह से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कार्यस्थलों पर विविधता को बढ़ावा देता रहा है। गार्टनर की रिपोर्ट बताती है कि संगठनों से जुड़े 75 प्रतिशत प्रमुखों को कुशल प्रतिभा की कमी का सामना करना पड़ रहा है। चूंकि प्रतिभाशाली दिव्यांग जनों की प्रतिभा का अभी पूरी तरह इस्तेमाल नहीं हो पाया है, ऐसे में अधिकांश संगठन अब एआई के साथ खुद को लैस कर रहे हैं ताकि इन दिव्यांग उम्मीदवारों को स्किलिंग और प्रशिक्षण प्रदान करके उन्हें और भी अधिक सक्षम बनाया जा सके और उनकी प्रतिभा का उपयोग हो सके। इस तरह कार्यस्थल में भी विविधता नजर आने लगी है, जहां अब बड़े संगठनों द्वारा भी दिव्यांग जनों को स्वीकार किया जाने लगा है।

गार्टनर की रिपोर्ट में आगे विस्तार से बताया गया है कि 2023 तक नौकरी करने वाले दिव्यांग जनों की संख्या आज की तुलना में तीन गुना हो जाएगी, क्योंकि एआई की सहायता से कार्यस्थल की बाधाओं को कम किया जा सकेगा। गार्टनर का अनुमान है कि दिव्यांग लोगों को सक्रिय रूप से नियुक्त करने वाले संगठनों में कर्मचारियों के कायम रहने की दर 89 प्रतिशत रही है और इसके साथ ही कर्मचारी उत्पादकता में 72 प्रतिशत और संगठन की लाभप्रदता में 29 फीसदी की वृद्धि हुई है।

एआई ने दिव्यांग जनों के लिए कई विकल्प खोले हैं, जिससे उनके लिए कार्यस्थल में अधिक समावेशिता को जोड़ा जा सका है। दिव्यांग लोगों के लिए हाल के दौर में सामने आए कुछ और दिलचस्प विकल्पों में एक विकल्प है रेस्तरां का कारोबार, जहां वर्चुअल रियलिटी और ब्रेल को लागू करते हुए दिव्यांगों के लिए नए अवसरों का सृजन किया गया है। कई संगठनों ने अपने यहां सक्रिय रूप से एआई रोबोटिक्स टैक्नोलॉजी को लागू किया है, जिसमें दिव्यांग जनों द्वारा रोबोटिक्स को नियंत्रित किया जाता है और वे ही उसका रख–रखाव भी करते हैं।

इधर जबकि एआई के माध्यम से दिव्यांग जनों के लिए नए विकल्पों को विकसित किया जा रहा है, दूसरी तरफ एक्सेंचर की 'रीवायर फॉर ग्रोथ' शीर्षक वाली रिपोर्ट में कहा गया है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से वर्ष 2035 तक देश की अर्थव्यवस्था में लगभग 957 बिलियन डॉलर जोड़ने की क्षमता है। समग्र रूप में एआई में वह क्षमता है जो मशीन लर्निंग के साथ इन्फ्रास्ट्रक्चरल ग्रोथ के माध्यम से अनेक कारोबारों के लिए फायदेमंद साबित हो सकती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डीप लर्निंग नेत्र विज्ञान के क्षेत्र में भी फायदेमंद साबित होगी। यह टैक्नीक स्क्रीनडायबेटिक रेटिनोपैथी (डीआर) और रेटिनोपैथी ऑफ प्रीमैच्योरिटी (आरओपी) के लिए भी फायदेमंद होगी।

एआई ने कैरियर के अनेक ऐसे नए विकल्पों को खोलने में भी मदद की है, जहां सहायक तकनीक जैसे रीयल टाइम टैक्स्ट टू स्पीच और टैक्स्ट ट्रांसलेशन सिस्टम का उपयोग शिक्षकों द्वारा अपने छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए किया जाता है। इनका उपयोग क्षेत्रीय भाषाओं में मूल रूप से सूचना का प्रसार करने के लिए किया गया है जो वास्तव में दिव्यांग जनों के कौशल के लिए बनाए गए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के ड्राट के अनुरूप है। एआई तकनीक में एक और विकास बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन से संबंधित है, जिसका उपयोग छात्रों और शिक्षकों दोनों की उपस्थिति को दर्ज करने के लिए किया जाता है। इस तरह यह तकनीक कर्मचारियों की उपस्थिति और अन्य प्रशासनिक कार्यों को रिकॉर्ड करने के लिए फायदेमंद साबित हुई है। बॉयोमीट्रिक अटेंडेंस शिक्षकों और युवाओं दोनों की उपस्थिति के अनुपात को चिह्नित करने के लिए भी फायदेमंद साबित हुई है और इस तकनीक के माध्यम से उच्च शिक्षा के लिए पुरुष–महिला नामांकन के अनुपात की सटीक जानकारी मिल सकती है। छात्रों की शंकाओं और उनके सवालों के जवाब देने के लिए चौटबॉट्स का उपयोग किया जा रहा है, जिन्हें दरअसल विषय विशेषज्ञों ने तैयार किया है। नीति आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग का इस्तेमाल दीक्षा, ई–पाठशाला और स्वयंम (स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स) जैसे प्लेटफार्मों पर बड़े पैमाने पर आकलन के स्वचालित ग्रेडिंग के लिए किया जा सकता है। इसमें सिर्फ वस्तुनिष्ठ प्रश्न ही नहीं, वर्णनात्मक सवालों को भी शामिल किया जा सकता है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि शिक्षा क्षेत्र ने एआई के इस्तेमाल के साथ ही दिव्यांग जनों के लिए अनेक नए विकल्प खोल दिए हैं। इस राह में अनेक बाधाएं भी सामने आ सकती हैं, लेकिन निश्चित रूप से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीक सभी क्षेत्रों में नए अवसरों का सृजन करेगी, खास तौर पर शिक्षा के क्षेत्र में जहां दिव्यांग जनों के लिए यह तकनीक बेहत फायदेमंद साबित हो सकती है।

NARAYAN SEVA SANSTHAN

Our Religion is Humanity

संस्थान सेवा कार्य विवरण-जून,2021

क्र.सं.	सेवा कार्य	पिछले माह के आंकडे			मई माह के आंकडे
01	दिव्यांग ऑपरेशन सख्या	423750			423750
02	व्हील चेयर वितरण सख्या	273253			273403
03	ट्राई साईकिल वितरण सख्या	263472			263522
04	बैसाखी वितरण सख्या	295039			295289
05	श्रवण यंत्र वितरण संख्या	55004			55004
06	सिलाई मशीन वितरण संख्या	5220			5220
07	कृत्रिम अंग वितरण संख्या	16162			16462
08	केलीपर लाभान्वित संख्या	357697			358197
09	नशामुक्ति संकल्प	37749			37749
10	नारायण रोटी पैकेट	1054400			1078400
11	अन्न वितरण (किलो में)	16380372			16382872
12	भोजन थाली वितरण रोगीयो कि संख्या	39163000			39172000
13	वस्त्र वितरण संख्या	27077320			27077320
14	स्कुल युनिफार्म वितरण सख्या	150500			150500
15	स्वेटर वितरण संख्या	135500			135500
16	कम्बल वितरण संख्या	172000			172000
17	विवाह लाभान्वित जोड़े	2109 जोड़े (35वां विवाह सम्पन्न)			2109 जोड़े
18	हेंडपम्प सख्या	49			49
19	आवासीय विद्यालय	वर्तमान में बच्चों कि संख्या 95	कुल सीटे 75	अब तक लाभान्वित 455	455
20	नारायण चिल्ड्रन एकेडमी	वर्तमान में बच्चों कि संख्या 277	कुल सीटे 300	अब तक लाभान्वित 821	821
21	भगवान महावीर निराश्रित बालगृह	वर्तमान में बच्चों कि संख्या 184	कुल सीटे 200	अब तक लाभान्वित 3160	3160
22	व्यवसायिक प्रशिक्षण विवरण	सिलाई कुल बैच - 50 लाभान्वित - 961	मोबाइल कुल बैच-55 लाभान्वित-871	कम्प्युटर कुल बैच -56 लाभान्वित-878	सिलाई-961 मोबाईल- 871 कम्प्युटर- 878
	कोरोना रिलीफ सेवा अब तक				
23	फूड पैकेट्स				213051
24	राशन किट				29603
25	मास्क डिस्ट्रीब्यूशन				92504
26	कोरोना दवाई किट				1891
27	एम्बुलेंस/ऑक्सीजन/हॉस्पीटल बेड				482

सम्पादकीय

मन मानव का सबसे बड़ा सहयोगी भी है और असहयोगी भी। यदि मन पर अपना नियंत्रण है, उसके निर्णयों में विवेक का प्रयोग है तो उससे बड़ा सहयोगी कोई नहीं। और यदि मन का हम पर नियंत्रण है तो वह हमारे उत्थान के बजाय पतन का उत्तरदायी ज्यादा हो सकता है। मन को साधने के लिए ही समस्त जप, तप और साधन किये गये हैं, ऐसा प्रतीत होता है। मन एक शक्तिशाली संसाधन है। यह अत्यंत त्वरायुक्त, ऊर्जायुक्त तथा मुक्तियुक्त संसाधन है, पर इसका उपयोग ही इसकी सकारात्मकता और नकारात्मकता का निर्धारण करता है। मन को तुरंग या घोड़ा भी कहा गया है जो नियंत्रण में रहे तो सवार को मनवांछित मंजिल तक लेकर चला जाये और बिगड़ जाये तो सवार ही न होने दे। अतः मन को साधने के लिए अन्य साधनों के साथ–साथ सेवा का भी अपना उपयोग है।

कुछ काव्यमय

दाता बनना है कठिन,
फिर भी बनो जरूर।
दाता बनते ही नहीं,
ईश्वर हम से दूर।।
देने वाले का सदा,
हृदय कमल विकसाय।
अनजाने ही हो रहा,
मुक्तिगामी उपाय।।
देते देते मानवी,
देव योनि हो जाय।
बैकुण्ठा वासा रहे,
जनम मरण कट जाय।।
देने का अवसर मिले,
वह बड़भागी होय।
बस लेता– लेता रहे,
तो यह जीवन खोय।।
लेना कम देना अधिक,
रखना हरदम ध्यान।
सुर कहलायेंगे मरे,
जीते जी इन्सान।।

– वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

देने में बड़ा आनंद

एक बार एक शिक्षक, अपने एक युवा शिष्य के साथ टहलने निकले। उन्होंने देखा कि रास्ते में पुराने एक जोड़ी जूते उतरे पड़े है, जो पास के खेत में काम कर रहे मजदूर के थे वह काम खत्म कर घर जाने की तैयारी में था। शिष्य को मजाक सूझा, उसने शिक्षक से कहा, ''गुरुजी क्यों न हम ये जूते कहीं छिपा दें।

मजदूर इन्हें यहां नहीं पाकर घबराएगा तो बड़ा मजा आएगा। ''शिक्षक गम्भीरता से बोला ''किसी गरीब के साथ इस तरह का मजाक ठीक नहीं है। क्यों ना हम इन जूतों में कुछ सिक्के डाल दें और छिपकर देखें कि इसका मजदूर पर क्या प्रभाव

पड़ता है।

शिष्य ने ऐसा ही किया और दोनों पास ही झाड़ियों में छिप गए। मजदूर आ गया। उसने जैसे ही एक पैर जूते में डाला, उसे किसी चीज का आभास हुआ। उसने जूते में देखा कि कुछ सिक्के पड़े थे। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने इधर–इधर देखा। अब उसने दूसरा जूता उठाया, उसमें भी सिक्के थे। उसकी आंखों में आंसू आ गए उसने हाथ जोड़कर कहा, हे भगवान्! समय पर प्राप्त इस सहायता के लिए उस अनजान सहायक का लाख–लाख धन्यवाद। उसकी सहायता के कारण आज मेरी बीमार पत्नी को दवा और भूखे बच्चों को रोटी मिल सकेगी।

मजदूर की बातें सुन शिष्य की आंखे भर आई। शिक्षक ने शिष्य से कहा 'क्या तुम्हारी मजाक वाली बात की अपेक्षा जूते में सिक्का डालने से तुम्हें कम खुशी मिली? ''शिष्य बोला, आपने आज मुझे जो पाठ पढ़ाया है, उसे मैं जीवन भर नहीं भूलूंगा।

–कैलाश 'मानव'

अमूल्य है प्रशंसा

हमारे भीतर अगर धन्यवाद का भाव आ जाए तो जीवन सुखमय हो जाएगा। हर अच्छाई की प्रशंसा करके लोगों के दिलों को जीता जा सकता है। एक परिवार में पति– पत्नी और बच्चा बडे प्यार से रहते थे। पति और पत्नी दोनों जॉब करते थे। गृहस्थी आराम से चल रही थी। एक दिन की बात है कि पत्नी थकी–मांदी ऑफिस से लौटी, उसने जैसे–तैसे भोजन बनाया और रख दिया। देर शाम पति घर लौटा। उसने उस भोजन को प्रेम से खा लिया, परन्तु उसके बेटे को भोजन नहीं भाया।

बेटे ने रात को सोते समय पिता से पूछा पापा ! आज भोजन कच्चा था, फिर भी आपने खा लिया। मम्मी को कुछ नहीं बोला तब पिता ने प्यार से बेटे के सिर पर हाथ फिराते हुए कहा–

आपकी मम्मी रोजाना अच्छा भोजन बनाती है, आज उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। इसीलिए अच्छा भोजन नहीं बना पाई, कोई बात मैंने कुछ नहीं कहकर घर में अशांति को रोक लिया। बेटा पिता से एक अच्छी बात सीख गया। लेकिन दूसरी कहानी में एक पत्नी ने पति की थाली में घास–फूंस, कंकर –पत्थर ढककर परोस दिया। पति ने भोजन के लिए ऊपर की थाली हटाई तो घासं–फूंस देखकर आग–बबुला हो गया और जोर–जोर से कहने लगा कि मुझे तुमने जानवर समझा है क्या? पत्नी पलटकर जवाब देती है–पतिदेव ! आज शादी को 5 वर्ष हो गए मैंने अच्छे–अच्छे व्यंजन बनाकर आपको परोसे, परन्तु आपने कभी भी अच्छा या बुरा, कुछ भी नहीं कहा। मुझे लगा कि आप जानवर ही है जो अच्छे को अच्छा कहना नहीं जानते। यह सुनकर पति ने सीख ली कि मुझे उसकी अच्छाई भी बताना चाहिए थी, ताकि वह हमेशा खुश रहती ।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

बस स्टेण्ड पहुँचा तब तक पिण्डवाड़ा जाने वाली बस जा चुकी थी, अगली बस डेढ़ घण्टे बाद थी, कैलाश के लिये एक एक पल गुजारना मुश्किल हो रहा था। बस स्टेण्ड से निकल वह बाहर सड़क पर आकर खड़ा हो गया और वहां से गुजरने वाले वाहनों को हाथ देकर रोकने की कोशिश करने लगा। दो तीन वाहन गुजर गये, कोई रूकने को तैयार नहीं, तभी दूर से एक ट्रक आती नजर आई। कैलाश सड़क के बीचों बीच आकर खड़ा हो गया और दोनों हाथ फैलाकर आती हुई ट्रक के सामने इस तरह खड़ा हो गया जैसे वह उसे अपने हाथों से ही रोक लेगा।

पास आते आते ट्रक धीमी हुई और रूक गई। ड्राइवर ने आग बबूला होते हुए कैलाश को दो चार भद्दी भद्दी गालियां दी और कहा कि –क्या मरने का इरादा है। कैलाश हाथ जोड़ते हुए ड्राइवर के पास गया और उससे विनती की कि उसे पिण्डवाड़ा छोड़ दे।

कैलाश ने ड्राइवर को एक्सीडेंट के बारे में बताया तो ड्राइवर का मन पसीज गया। उसने कैलाश को अपने पास बिठा लिया। कैलाश ने भगवान को लाख धन्यवाद दिया और सोचने लगा कि भंवरसिंह किस हालत में होगा, वह केसे उसकी मदद करेगा।

ड्राइवर ने कैलाश को पिण्डवाड़ा उतार दिया, कैलाश ने उसे कुछ पैसे देने चाहे मगर उसने लेने से इन्कार कर दिया। शीघ्र ही वह डिस्पेन्सरी पहुँच गया। यहां के हाल देख वह सन्न रह गया। चारों तरफ चीख–पुकार मची हुई थी, एक तरफ चद्दर से ढकी 7 लाशें हुई थी। कैलाश ने अपने जीवन में कभी एक साथ इतनी लाशें नहीं देखी थी, मृतकों के परिजनों के रूदन और घायलों की कराहों से समूचा वातावरण अत्यन्त मार्मिक हो उठा था।

अपने आपको संभालते हुए, लोगों की भीड़ को चीर कर कैलाश डिस्पेन्सरी के अन्दर पहुँचा अन्दर कोलाहल बढ़ गया। दुर्घटना में 40 लोग घायल हुए थे, सब इधर–उधर पड़े थे, इन्हीं में कहीं भंवर सिंह भी होगा, सोचते हुए कैलाश एक के बाद एक घायल का चेहरा देखते हुए आगे बढ़ने लगा।

अंश-49

सर्व स्वीकार्यता

स्वामी विवेकानंद विदेश यात्रा पर थे। जहां वे ठहरे हुए थे, वहां कई विदेशी उनसे मिलने पहुंचते थे। एक दिन एक गोरे पति–पत्नी स्वामीजी से मिलने पहुंचे। पति–पत्नी स्वामीजी से बहुत प्रभावित थे और उनके भक्त भी थे।

गोरे पति–पत्नी ने स्वामीजी से मिलने के लिए समय मांगा। उस समय स्वामीजी के आसपास कुछ बच्चे खेल रहे थे। पति–पत्नी ने स्वामीजी से कहा, हमारी कोई संतान नहीं है। हमें भरोसा है कि अगर आप हमें आशीर्वाद दे दें या कोई चमत्कार कर दें तो हमारे यहां बच्चा हो जाएगा।

वे लोग विदेशी थे, लेकिन उन्हें भारतीय संस्कृति की जानकारी थी। उन्हें कई साधु–संतों की कथाएं मालूम थीं। उन्होंने कहा, श्स्वामीजी हमने सुना है कि साधु–संत आशीर्वाद देते हैं तो लोगों के यहां संतान हो जाती हैं। आप हमें आशीर्वाद दीजिए कि हमारे घर संतान आ जाए।

स्वामीजी ने मुस्कान के साथ कहा, आपको संतान चाहिए?

पति–पत्नी बोले, हां।

स्वामीजी ने कहा, मेरे माध्यम से चाहिए?

दंपत्ति ने कहा, हां, अगर आपके माध्यम से संतान मिलेगी तो वह योग्य होगी। हम और ज्यादा प्रसन्न हो जाएंगे।श

विवेकानंदजी ने कहा, अगर मैं संतान दूं तो उसे स्वीकार करोगे?

दोनों स्वामीजी के भक्त थे, उन्होंने कहा, आप जो संतान देंगे, हम उसे जरूर स्वीकार करेंगे। स्वामीजी ने वहीं खेल रहे एक अनाथ निग्रो बच्चे को उठाया और उसका हाथ पति–पत्नी के हाथ में दिया और कहा, श्आज से ये बच्चा आपका। यही मेरा आशीर्वाद है। उस गोरे दंपत्ति ने स्वामीजी द्वारा दिए गए बच्चे को स्वीकार किया और उसका पालन करने की जिम्मेदारी संभाल ली।

करेला है औषधीय गुणों से भरा

कड़वे स्वाद वाला करेला ऐसी सब्जी है, जिसे अक्सर नापसंद किया जाता है। लेकिन, अपने पौष्टिक और औषधीय गुणों के कारण यह दवा के रूप में भी काफी लोकप्रिय है।

त्वचा रोग में लाभकारी – इसमें मौजूद बिटर्स और एल्केलाइड तत्व रक्त शोधक का काम करते हैं। करेले की सब्जी खाने और मिक्सी में पीस कर बना लेप रात में सोते समय लगाने से फोड़े–फुंसी और त्वचा रोग नहीं होते। दाद, खाज, खुजली, सियोरोसिस जैसे त्वचा रोगों में करेले के रस में नीबू का रस मिलाकर पीना फायदेमंद है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए – करेले में मौजूद खनिज और विटामिन शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं जिससे कैंसर जैसी बीमारी का मुकाबला भी किया जा सकता है।

जोड़ों के दर्द से राहत दे – गठिया या जोड़ों के दर्द में करेले की सब्जी खाने और दर्द वाली जगह पर करेले के पत्तों के रस से मालिश करने से आराम मिलता है।

उल्टी–दस्त में फायदेमंद – करेले के तीन बीज और तीन काली मिर्च को घिसकर पानी मिलाकर पिलाने से उल्टी–दस्त बंद हो जाते हैं। अम्लपित्त के रोगी जिन्हें भोजन से पहले उल्टियां होने की शिकायत रहती है, करेले के पत्तों को सेककर सेंधा नमक मिलाकर खाने से फायदा होता है।

मोटापा से राहत दिलाए – करेले का रस और एक नीबू का रस मिलाकर सुबह सेवन करने से शरीर में उत्पन्न टॉक्सिंस और अनावश्यक वसा कम होती है और मोटापा दूर होता है।

पथरी रोगियों के लिए अमृत – पथरी रोगियों को दो करेले का रस पीने और करेले की सब्जी खाने से आराम मिलता है। इससे पथरी गलकर बाहर निकल जाती है। 20 ग्राम करेले के रस में शहद मिलाकर पीने से पथरी गल कर पेशाब के रास्ते निकल जाती है। इसके पत्तों के 50 मिलीलीटर रस में थोड़ी–सी हींग मिलाकर पीने से पेशाब खुलकर आता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

उदयपुर लाये। उदयपुर में बताया, सेक हुआ कोबाल्ट मशीन पर। कॉटेज का कमरा लिया– उदयपुर में। ये बात 1985 की 86 की। एक दिन बोले पिताजी– कैलाश तूं कभी भी गरीबों की सेवा मत छोड़ना। मेरे मोह में यहाँ बैठे मत रह जाना। जा शनिवार आ गया, शिविर की तैयारी कर। मैं तुझे आश्वासन देता हूँ कि– "जब तक तूं शिविर करके आ नहीं जायेगा, मैं प्राणों को छोड़ूंगा नहीं। आँखों में आँसू आ गये। बाई भी रोने लग गई। जा कैलाश जा, सेवा कर बेटा। हम यहाँ देख लेंगे।

अलसीगढ़ गये शाम को पांच बजे आये। पिताजी ने कहा– कितने बच्चे आए थे। 73 बच्चे थे। सबको ड्रेसें दे दी बेटा? नहीं पिताजी केवल 52 बच्चों को ड्रेस दे पाये, 21 बच्चों को नहीं दे पाये। हमारे पास पैसे इतने ही थे। ड्रेसें इतनी ही थी, कहाँ से लाते? पिताजी ने अपनी अंगूठी उतारी सोने की। ले कैलाश बेच देना। इससे जितना भी पैसा आवे ड्रेसें खरीद लेना। कल ही बच्चों को ड्रेसें ले के देना। आँखें भर आयी। ऐसे महान पूज्य पिताश्री। सेक कराया सब कुछ किया बाद में भाईसाहब कोटा ले गये। बीस दिन बाद में पिताजी की सेवा करने पहुँचा। बापूजी एक दिन प्रातःकाल बोले– आज खीर खाने की इच्छा हो रही है। माताजी ने, भाभीजी ने खीर बनाई, खीर जीमी। नौ–दस बजे राधेश्याम भाईसाहब ने मुझे बुलाया। पहले कहा था– कैलाश रात को मेरे पास ही सोना। बाई ने कहा– कैलाश मैं भी ध्यान रखूंगी। बहुत सेवा बाई ने की। दस बजे बोले– राधेश्याम, कैलाश मेरी आवाज यदि बंद भी हो जाये तो भी हरि कीर्तन करते रहना। ऐसा ही भाईजी हनुमानप्रसाद जी पौद्दार ने सेठजी जय दयालजी गोयनका के मुँह से सुना। सेठजी ने यही कहा था– पौद्दार जी हरि कीर्तन करते रहना। ये सेवा कीर्तन, हरि कीर्तन, ये भजन, ये सेवा। और दस साढ़े दस बजे बापूजी की आवाज बंद हो गई। हम बोलते रहे– रघुपति राघव राजा राम।

वर्णानाम अर्थ संगा नाम, रसानाम् छन्द सामपि।
मंगलानाम च कर्तारो, वन्दे वाणी विनायको।।
मूक होई वाचाल, पंगु चढ़ै गिरिवर गहन।
जासु कृपासु दयाल, द्रवहु सकल कलिमल दहन।।

हरि कीर्तन सुनते हुए पिताजी ने बड़े प्यार से देखा कैलाश, राधेश्याम, पुष्पा भाभीजी, बाई श्रीमती सोहनदेवी जी और आशीर्वाद देते हुए अपने नेत्र हमेशा के लिए बंद कर दिये।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 176 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें
मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999
आपके अपने संस्थान का पता
नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023